# अध्याय-द्वितीय

## संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

# अध्याय द्वितीय

## संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

### 2.1 प्रस्तावना

शोध से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसन्धान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पद है। किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य उस नींव की ईट समान होता है जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी होती है।

सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधानात्मक द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंधित समस्याओं पर कार्य से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। किसी भी क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान करने के लिए संबंधित साहित्य का अवलोकन एक अनिवार्य एवं आवश्यक कदम होता है।

समस्या से संबंधित कार्य का पुनरावलोकन अनुसंधान आधार का तथा गुणात्मक स्तर के निर्धारण का महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो अथवा सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र हो साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य तथा प्रारंभिक चरण है।

### 2.2 पूर्व शोध कार्य का आंकलन

पूर्व में किए गए शोध कार्य के आंकलन में शोधकार्य का अध्ययन दो भागों में विभक्त किया गया है-

(i.) भारत में किएगए शोधकार्य

(ii.) विदेश में किए गए शोधकार्य

(1) *भारत में किए गए शोधकार्य*

- *त्रिवेदी, रोहित (1986)* त्रिवेदी ने भारत के म.प्र. राज्य के भोपाल शहर में दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थियों का और श्रवण बोध का अध्ययन किया। इस शोध में 91 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें से 70 सामान्य विद्यार्थियों और 21 दृष्टिहीन विद्यार्थियों को लिया। इस शोध कार्य का यह निष्कर्ष निकला की सामान्य विद्यार्थियों का कक्षा के बढ़ने के साथ ही अर्थात कक्षा 5 से कक्षा 6वीं , 7वीं में पठन व श्रवण बोध बढ़ता जाता है। किन्तु दृष्टिहीन विद्यार्थियों का पठन व श्रवण बोध कम बढ़ता हुआ देखा गया।
- *बैनर्जी (1986)* बैनर्जी में पश्चिम बंगाल के माध्यमिक विद्यालय में एकीकृत शिक्षा पा रही दृष्टिहीन विद्यार्थियों की समस्या पर अध्यापन किया। इस शोध का उद्देश्य सामान्य कक्षा में अध्ययनरत् दृष्टिहीन विद्यार्थी की समस्या का अध्ययन किया। इस समस्या पर स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया गया है।

- *प्रियरंजन सिंह (1993).* विकलांग समेकित शिक्षा प्रयोजना के अतंर्गत विकलांग छात्र-छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन। *उद्देश्यः-* विकलांग बालकों को पहचानना, विकलांग बालको की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को जानना, विकलांग बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना। *निष्कर्ष :-*विकलांग बालकों के सामाजिक आार्थिक स्तर का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, और मध्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विकलांग बालकों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं होता। उच्च सामाजिक एवं आर्थिक स्तर वाले विकलांग बालकों तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं होता।

- *राजेन्द्र कुमार देशमुख (1994).* समेकित शिक्षा प्रयोजना के अंतर्गत माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विकलांग एवं सामान्य छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।

  *उद्देश्यः* माध्यमिक विद्यालय स्तर के अध्ययन का 14 वर्ष आयु समूह के विकलांग बालक बालिकाओं की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

  - इसी आयु समूह के सामान्य छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
  - समेकित शिक्षा प्रयोजना के अंतर्गत विकलांग एवं सामान्य बालक-बालिकाओं की सृजनात्मकता की तुलना करना।

*निष्कर्ष* • छात्र-छात्राओं की प्रवाहशीलता में सार्थक अंतर नहीं होता है। • विकलांग छात्राओं में प्रवाहशीलता, विकलांग छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया जाता है। • सामान्य छात्र एवं विकलांग छात्रों की प्रवाहशीलता में सार्थक अंतर होता है। • लिंग तथा विकलांगता के मध्य सम्मिलित रूप से अतः क्रियाओं के प्रभाव में सार्थक अंतर है।

- *एल.के. पाण्डेय (1996).* सामान्य एवं विकलांग छात्र-छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्थिति, आत्मबोध एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन *उद्देश्यः-*
  - सामान्य छात्र-छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
  - विकलांग छात्र-छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
  - सामान्य वं विकलांग छात्र-छात्राओं के सामाजिक-आर्थिक स्थिति की तुलना।

*निष्कर्ष :-*सामान्य एवं विकलांग छात्र-छात्राओं के सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सार्थक अंतर होता है और सामान्य एवं विकलांग छात्र-छात्राओं के सामाजिक आत्मबोध में सार्थक अंतर नहीं होता है। सामान्य तथा विकलांगता के मध्य सामाजिक, आर्थिक स्थिति की अन्तः क्रिया का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

- *तिवारी सरिता (1997-98),* तिवारी ने भारत के म.प्र. राज्य के भोपाल शहर से सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों की समेकित शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन किया।

*उद्देश्य* :- सामान्य विद्यार्थियों से विकलांग विद्यार्थियों की समेकित शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन करना था। इस शोध कार्य में न्यादर्श 4 विद्यालयों से 30 विद्यार्थियों को लिया गया। जिसमें 15 सामान्य और 15 विकलांग विद्यार्थी लिये गये थे। *निष्कर्ष* :- दृष्टिहीन व सामान्य विद्यार्थि सकारात्मक अभिव्यक्ति से है, क्योंकि सामान्य विकलांग विद्यार्थि प्राकृतिक के अंतर्गत के साथ है। अध्ययन करना चाहते है विकलांगता जिसमें बाधक नहीं है।

- *सरिता गर्ग (2005).* सामान्य व विकलांग विद्यार्थियों की समेकित शिक्षा के प्रति अभिवृति पर काम किया है। उद्देश्य :- • सामान्य विद्यार्थियों की समेकित शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति पर काम किया है। • विकलांग विद्यार्थियों की समेकित शिक्षा के प्रति अभिवृति मापन। • सामान्य छात्रों का विकलांगों की समेकित शिक्षा के प्रति अभिवृति मापन विकलांग छात्राओं की समेकित शिक्षा के प्रति अभिवृति मापन / *निष्कर्ष* :-इस अनुसंधान में न्यादर्श के संतुलन व विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त किए गए। सामान्य व विकलांग विद्यार्थियों की समेकित शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति में अंतर नहीं पाया गया सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृति का कारण उनका साथ-साथ शिक्षा प्राप्त करना हो सकता है। सामान्य व विकलांग छात्र-छात्राओं की समेकित शिक्षा के प्रति अभिवृति में अन्तर नहीं पाया गया है।

- *डॉ. एस. के. गुप्ता (1997).* अध्यापकों के लिए समेकित शिक्षा दर्शिका विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सहायता हेतु *राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भोपाल शिक्षण सामग्री मार्गदर्शिका। उद्देश्य* :- सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सामान्य स्कूल के शिक्षकों एवं जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षकों की एकीकृत शिक्षा योजना एवं निशक्तजन अधिनियम 1995 की जानकारी प्रदान करना। विकलांग बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों एवं प्रशिक्षकों के सहयोग से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के लिए शिक्षण सामग्री का विकास करना।

*(2) विदेशों में किए गए शोध कार्य*

- *टॉविन (1971).* टॉविन ने प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों का दृष्टिहीन विद्यार्थी के प्रति अभिव्यक्ति की समस्या का अध्ययन किया। *उद्देश्य* :- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की सामान्य कक्षा में दृष्टिहीन विद्यार्थियों के द्वारा अभियोजना का अध्ययन करना था इस शोध में बर्मिघम विश्वविद्यालय के 80 विद्यार्थी को प्रसिद्धी रूप में चुना गया था। *निष्कर्ष* :- इस अध्ययन में पाया गया की प्रशिक्षित शिक्षकों की सामान्य कक्षा में दृष्टिहीन विद्यार्थी के प्रति सकारात्मक नहीं थी। अर्थात वे दृष्टिहीन विद्यार्थी को कक्षा में स्वीकार नहीं कर पा रहे थे।

- इरविन ने, *विशिष्ट व एकीकृत वातावरण में दृष्टि विकलांग बच्चों की सामाजिक सहयोग का अध्ययन* किया। *उद्देश्य* :- विशिष्ट विद्यालय के दृष्टिहीन

विकलांग बच्चों तथा एकीकृत विद्यालय के दृष्टिहीन विकलांग बच्चों के समन्वय वातावरण में कुछ प्रयोग अरोपण किए। इरविन ने देखा की एकीकृत विद्यालय के बच्चे अपने वातावरण के अनुसार अपने विचारों को निर्माण करते है। जबकि विशिष्ट विद्यालय के बच्चें अपने वातावरण के अनुसार व अन्य तरीकों से विचारों का निर्माण करते है।

इस शोध में प्रति 30 बच्चों का जिसमें 15 दृष्टिहीन बच्चें विशिष्ट विद्यालय के तथा 15 बच्चें एकीकृत विद्यालय से लिये गए थे। इस शोध से यह निष्कर्ष निकाला गया कि विशिष्ट विद्यालय तथा एकीकृत विद्यालय के दृष्टिहीन बच्चों में विशिष्ट विद्यालय के दृष्टिहीन बच्चों ज्यादा समय खेल में लगाते थे। और एक क्रिया से दूसरी क्रिया में परिवर्तन में बहुत कम समय लगाया।